E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 33-36
Received: 08-03-2023
Accepted: 19-04-2023

अजय कुमार गोविन्द राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अजय कुमार गोविन्द राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का समीक्षात्मक का अध्ययन

अजय कुमार गोविन्द राव, डॉ. रंजना तिवारी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.973

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 96 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 96 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 960 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। न्यादर्श में चयनित कुल 1200 अभिमतदाताओं में से 77.08 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.88 है तथा मानक विचलन 16.09 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 63.90 है तथा मानक विचलन 15.71 है।

कुटशब्दः सतना जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक मूल्य, सामाजिक स्तर

1. प्रस्तावना
शिक्षा शब्द की उत्पत्ति के अध्ययन के बाद कहा जा सकता है कि सामान्यतः सामाजिक, सांस्कृतिक, मानवीय तथा आर्थिक क्रियाओं का आत्मसात कर अपने तथा समाज के लिए मूल्यपरक सेवा देना ही शिक्षा है।

भारतीय शिक्षा को गाँधी जी की सबसे बड़ी देन बेसिक शिक्षा प्रणाली है जिसके माध्यम से उन्होंने अपने शिक्षा विषयक विचारों को देश के सम्मुख रखने का प्रयास किया। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रणाली में निहित लक्ष्य देश की आवश्यकता के अनुरूप थे और इसमें प्रचलित पाठ्यक्रम बहुत व्यापक न हो सकी। भारत की सामाजिक व्यवस्था में कार्यानुभव, क्रिया केन्द्रित शिक्षा, समाजोपयोगी उत्पादक क्रिया आदि को समुचित स्थान प्राप्त होगा। इन सबके मूल में भारतीय परिस्थिति में बुनियादी शिक्षा की उपेक्षा वैचारिक दृष्टि से नहीं हो सकती।

प्रत्येक विद्यार्थी की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एक–दूसरे से भिन्न हुआ करती है। छात्र–छात्राओं पर उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है, इसलिए विद्यार्थियों का आचरण –व्यवहार, आदतों, रुचियों, आकांक्षा स्तर, प्रेरणा इत्यादि में विभिन्नता दृष्टिगोचर होता है। अर्थात उनका व्यक्तित्व प्रभावित होता है। जिन विद्यार्थियों की समाजिक–आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, वे कुपोशण से ग्रस्त और गरीबी त्रस्त विद्यार्थियों की अपेक्षा तीव्र ग्रति से विद्यालय में शैक्षिक प्रगति करते है। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों कुण्ठा एवं हीनता की भावना परिलक्षित होती है, जिससे उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व कुप्रभावित हो जाता है। परिणामस्वरूप वे कभी–कभी असामाजिक कार्यों की ओर प्रवृत्त होती जाती है। सुशिक्षित एवं संस्कारयुक्त तथा उच्च आर्थिक परिवार के छात्र –छात्राओं की अभिवृत्ति, उपलब्धि, चिन्तन, महत्वकांक्षा, अधिगम की गति एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा अशिक्षित एवं अपेक्षाकृत निम्न आर्थिक स्थिति से युक्त परिवारों से आने वाले छात्र–छात्राओं की अपेक्षा श्रेष्ठ होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य

सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि विद्यार्थी के अभिभावकों की शिक्षा का स्तर ऊँचा एवं अच्छा है तो वह अपने पाल्यों को भी उत्तम एवं उच्च शिक्षा के लिए अभिप्रेरित करते है तथा यही शिक्षा विद्यार्थी को समाज में उर्ध्वाधर सामाजिक गतिशीलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र सतना जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न प्राचार्य, अभिभावक, शिक्षक तथा छात्रों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

6.4 शोध उपकरण

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण –

1. साक्षात्कार अनुसूची
2. प्रश्नावली पत्रक
3. उपलब्धि परीक्षण पत्रक आदि।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 96 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 96 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 960 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], गहरवार मिथलेस सिंह (2005)[5], चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007)[6], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[7], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[8], सिंह, प्रदीप कुमार एवं सिंह, जय (2019)[9], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017)[10]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन,

रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1: "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव					
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	48	37	77.08	06	12.50	05	10.42
2.	अभिभावक	96	65	67.71	12	12.50	19	19.79
3.	शिक्षक	96	76	79.17	10	10.42	10	10.42
4.	छात्र	960	747	77.81	86	8.96	127	13.23
योग		1200	925	77.08	114	9.50	161	13.42
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 1036.36$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 06–06 प्राचार्यों, कुल मिलाकर 48 प्राचार्यों, 12–12 अभिभावक व शिक्षकों कुल 96 अभिभावक व शिक्षक और इसी प्रकार 120–120 छात्र–छात्राएँ कुल 960 छात्रों से शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

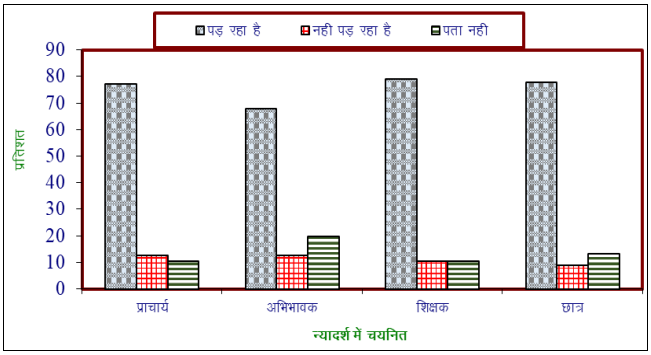

आरेख 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 77.08 प्रतिशत प्राचार्य, 67.71 प्रतिशत अभिभावक, 79.17 प्रतिशत शिक्षक व 77.81 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

न्यादर्श में चयनित कुल 1200 अभिमतदाताओं में से 77.08 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है, 9.50 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 13.42 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 1036.36 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

परिकल्पना क्र. – 2: "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक षिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		480	480
मध्यमान (M)		59.88	63.90
मानक विचलन (SD)		16.09	15.71
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.92	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
$df = (480-1) + (480-1) = 479+479 = 958$

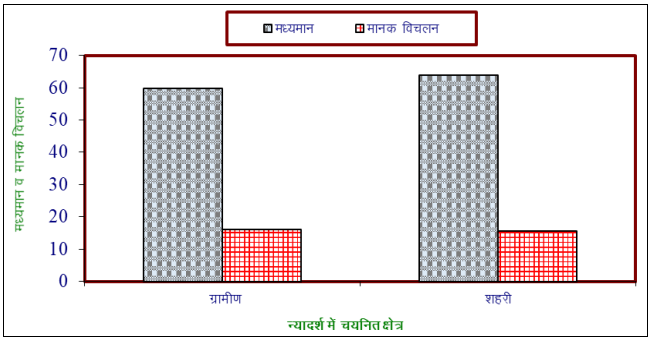

आरेख 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.88 है तथा मानक विचलन 16.09 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 63.90 है तथा मानक विचलन 15.71 है।

958 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3.92 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 2 निरसित होती है।

12. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के 77.08 प्रतिशत प्राचार्य, 67.71 प्रतिशत अभिभावक, 79.17 प्रतिशत शिक्षक व 77.81 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

13. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989): मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.
3. कपिल, एच.के. (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988): राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. गहरवार मिथलेस सिंह (2005): रीवा जिले में राजीव गांधी शिक्षा मिशन के शैक्षिक नवाचारो का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययनः अप्रकाशित शोध ग्रंथ शिक्षा, अ.प्र.सिं.वि.वि.रीवा.
6. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, Research Journal of Social and Life Sciences. 2007;2(1):195-204.
7. झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार, सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
8. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारीः वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., वर्ष. 2006;24(3):75-84.
9. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेलः "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5):79-83.
10. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेलः "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5):79-83.